

प्रेस विज्ञप्ति

**जामिया ने डॉ. अंबेडकर की 136वीं जयंती मनाई; श्री रविंदर इन्द्राज सिंह, माननीय मंत्री,
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली, मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए**

नई दिल्ली, 13 अप्रैल, 2026

भारत रत्न डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर की 136वीं जयंती के अवसर पर, आज जामिया मिल्लिया इस्लामिया (जेएमआई) के डॉ. एम. ए. अंसारी सभागार में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में डॉ. अंबेडकर की विरासत और राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान को याद किया गया, जिसमें दिल्ली सरकार के समाज कल्याण, अ.जा./ अ.ज.जा. कल्याण, सहकारिता एवं चुनाव मंत्री, श्री रविंदर इन्द्राज सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। मंच पर श्री इन्द्राज सिंह के साथ मुख्य वक्ता के रूप में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) के प्रो. प्रमोद कुमार मेहरा, तथा जेएमआई के कुलपति प्रो. मजहर आसिफ़ और कुलसचिव प्रो. मो. महताब आलम रिज़वी भी उपस्थित थे। इस अवसर पर छात्र कल्याण डीन प्रो. नीलोफर अफज़ल और समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. आर. आर. पाटिल भी मौजूद थे।

परीक्षा नियंत्रक, मुख्य प्रॉक्टर, डीन, निदेशक, विभागाध्यक्ष, जेएमआई के अधिकारियों, संकाय सदस्यों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों से खचाखच भरे सभागार को संबोधित करते हुए, प्रो. रिज़वी ने डॉ. बी. आर. अंबेडकर के उन युगांतरकारी योगदानों की ओर ध्यान आकर्षित किया, जो सामाजिक न्याय, आर्थिक सुधार, श्रम सुधार, शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्रों में किए गए थे। "यह डॉ. अंबेडकर ही थे जिन्होंने मौलिक अधिकारों का विस्तार किया और उन्हें स्पष्ट तथा व्यापक रूप से निर्धारित किया, जिससे देश के सभी नागरिकों के बीच समानता सुनिश्चित हुई - चाहे उनकी जाति, पंथ, धर्म, क्षेत्र या लिंग कुछ भी हो," प्रो. महताब आलम रिज़वी ने कहा। उन्होंने डॉ. अंबेडकर के शिक्षा और आर्थिक सुधारों से जुड़े अन्य प्रमुख योगदानों को याद किया, और सदन को यह भी याद दिलाया कि कैसे भारतीय संविधान दुनिया के सबसे लंबे और बेहतरीन संविधानों में से एक है।

अपने मुख्य संबोधन में, प्रो. मेहरा ने टिप्पणी की कि "ऐसे समय में जब बड़े औपनिवेशिक साम्राज्य क्षेत्रीय विस्तार, विजय और नियंत्रण पर ध्यान केंद्रित कर रहे थे, डॉ. अंबेडकर सामाजिक न्याय की बात कर रहे थे।" उन्होंने डॉ. अंबेडकर के शैक्षिक दर्शन पर ज़ोर दिया और इस बात की आवश्यकता पर विस्तार से चर्चा की कि विद्वानों और विश्वविद्यालयों को डॉ. अंबेडकर को शिक्षा के एक प्रबल समर्थक और आजीवन सीखने वाले व्यक्ति के रूप में देखना चाहिए। डॉ. अंबेडकर शिक्षा को केवल डिग्री हासिल करने का माध्यम नहीं, बल्कि एक ऐसा मंच मानते थे जो विविध विचारों, विषयों और धार्मिक शिक्षाओं को आपस में जोड़ता है। श्रोताओं को डॉ. अंबेडकर की विद्वत्ता और कोलंबिया तथा लंदन स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स में बिताए उनके कॉलेज के दिनों की याद दिलाते हुए, और उन्हें एक 'ऑर्गेनिक इंटेलेक्चुअल' (सहज-बुद्धिजीवी) बताते हुए, प्रो. मेहरा ने कहा कि डॉ. अंबेडकर हमेशा यह मानते थे कि "मन का विकास ही मनुष्यों का अंतिम उद्देश्य होना चाहिए।" उन्होंने कहा कि डॉ. अंबेडकर की शिक्षाओं और विरासत को सही मायने में जीने के लिए, "भारत को एक ज्ञान-उत्पादक देश बनना होगा।"

माननीय मंत्री श्री रविंदर इन्द्राज सिंह ने अपने विचारोत्तेजक संबोधन में कहा कि "डॉ. अंबेडकर भारत के सबसे अधिक पूजनीय, प्रिय और सम्मानित सपूतों में से एक हैं, जो मानवता की निस्वार्थ सेवा का प्रतीक हैं।" उन्होंने कहा, "डॉ. अंबेडकर का उद्देश्य, उनका जीवन और उनके संघर्ष गहन शोध और विद्वतापूर्ण लेखन का विषय रहे हैं; फिर भी, डॉ. अंबेडकर के असाधारण व्यक्तित्व और अनुकरणीय जीवन को पूरी तरह से समझने के लिए उन पर किया गया कितना भी शोध पर्याप्त नहीं है।" डॉ. अंबेडकर को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णित करते हुए, जिनके पास न तो ज़मीन का एक इंच टुकड़ा था और न ही कोई अन्य भौतिक संपत्ति, फिर भी वे राष्ट्र के सबसे प्रिय और सम्मानित व्यक्तित्व बने - जिन्होंने वंचितों, भेदभाव के शिकार लोगों और कमज़ोर वर्गों के लिए संघर्ष किया - श्री रविंदर इन्द्राज सिंह ने आगे कहा, "उनका जीवन अपने आप में एक सीख है। आज भारत नई ऊंचाइयों को छू रहा है, लेकिन भारत की कोई भी परिकल्पना तब तक पूर्ण नहीं हो सकती, जब तक उसमें डॉ. अंबेडकर की परिकल्पना अविभाज्य रूप से जुड़ी न हो।" माननीय मंत्री महोदय ने जेएमआई को बधाई देते हुए कहा कि "जेएमआई देश का एक महान संस्थान है जो डॉ. अंबेडकर के दर्शन और शिक्षाओं का सही मायने में प्रतीक है, उन्हें दर्शाता है और उनका समर्थन करता है। आज के युवाओं को उन विचारों और मूल्यों से जुड़ने की ज़रूरत है जिनके लिए डॉ. अंबेडकर ने अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया।"

भारतीय संविधान के मुख्य निर्माता के रूप में उनकी विरासत पर ज़ोर देते हुए—जिसमें सामाजिक समानता, कानून और न्याय, तथा सभी मनुष्यों की गरिमा और सम्मान को बढ़ावा देना शामिल है—प्रो. आसिफ़ ने कहा कि "आज जब हम उनकी 136वीं जयंती मना रहे हैं, तो यह सभी भारतीयों के लिए गर्व और सम्मान का दिन है, एक ऐसा दिन जो सभी साथी मनुष्यों की गरिमा और सम्मान को मान्यता देता है।" यह बताते हुए कि डॉ. अंबेडकर भगवान बुद्ध, संत कबीर और महात्मा ज्योतिबा फुले की शिक्षाओं से बहुत अधिक प्रभावित थे, प्रो. आसिफ़ ने आगे कहा कि "बाबा साहेब अंबेडकर ने सभी व्यक्तियों की गरिमा का आह्वान किया था, और हमारे वंचित भाई-बहनों की मदद करना हमारी सामूहिक ज़िम्मेदारी है। आज वह दिन है जिस दिन एक महान व्यक्ति का जन्म हुआ था।"

प्रो. पाटिल ने धन्यवाद ज्ञापित किया, जिसके बाद राष्ट्रगान हुआ। डॉ. बी.आर. अंबेडकर की 136वीं जयंती के उपलक्ष्य में देशव्यापी समारोहों के एक हिस्से के तौर पर, जेएमआई के विभिन्न केंद्रों और विभागों द्वारा 13 अप्रैल, 2026 से विशेष व्याख्यान, वार्ताएं और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

प्रो. साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी